ROHINI NILEKANI philanthropies

12th CMS vatavaran
International Film Festival and Forum on Environment & Wildlife
RANCHI | 10-13 FEBRUARY 2026
TRAVELLING

"रांची ट्रैवलिंग फिल्म फेस्टिवल" कार्यक्रम के अवसर पर

'देशज अभिक्रम' एवं **'असर'** के संयुक्त तत्वावधान द्वारा आयोजित

Endorsed by

IUCN #NATURE FOR ALL

State Programme Partners

asar

SEOUL INTERNATIONAL ECO FILM FESTIVAL

Knowledge Partner

ROHINI NILEKANI philanthropies

12th CMS vatavaran
International Film Festival and Forum on Environment & Wildlife
RANCHI | 10-13 FEBRUARY 2026
TRAVELLING

ROOTS & RENEWAL

Indigenous Knowledge, Youth Voices, Planetary Stewardship

12 & 13 February 2026 | Audrey House, Ranchi

PROGRAMME HIGHLIGHTS

- Award Winning Film Screenings
- **VATAVARAN Ki Chaupal**
  Dialogues with CSOs
- **Alkapanari Gosha**
  Live Tribal Painting Session
- **Ayub Disom Kahani**
  Tribal Story Telling Session
- Nukkad Natak
- Green Filmmaking Workshop
- Youth Competition

Endorsed by

IUCN

#NATURE FOR ALL

State Programme Partners

asar

SEOUL INTERNATIONAL ECO FILM FESTIVAL

Knowledge Partner

Usha Martin University

रंग, रेखा और प्रतिरोध : जलवायु संकट पर झारखंड की महिला कलाकारों की चित्र प्रदर्शनी

रोहिणी नीलकानी फिलांथ्रोपीज के सहयोग से, सीएमएस वातावरण (CMS VATAVARAN) द्वारा 12 और 13 फरवरी 2026 को ऑड्रे हाउस, रांची में एनवायर्नमेंटल ट्रैवलिंग फिल्म फेस्टिवल' का आयोजन किया जा रहा है। इस महोत्सव में असर (ASAR) एक स्टेट प्रोग्राम पार्टनर के रूप में जलवायु संकट पर केंद्रित महिला कलाकारों की पेंटिंग्स की एक 'विशेष प्रदर्शनी' आयोजित करेगा। इसमें झारखंड की 19 युवा महिला कलाकारों की कृतियाँ शामिल हैं– दिव्याश्री, अनुकृति टोप्पो, सस्मि रेखा पात्रा, अर्पिता राज नीरद, सुधा कुमारी, निशी कुमारी, सृजिता, रोशनी खलखो, मनिता कुमारी उराँव, ज्योति वंदना लकड़ा, मानसी टोप्पो, रितेश्ना राज, चाँदनी कुमारी, काराबी दास, सोफिया मिंज, तान्या मिंज, नीलम नीरद, रंजीता सिंह और पिंकी कुमारी। इन चित्रों की नींव मई, 2025 में राँची स्थित डॉ. रामदयाल मुंडा ट्राइबल वेलफेयर रिसर्च इंस्टीट्यूट में सम्पन्न तीन दिवसीय "जेंडर और क्लाइमेट चेंज पर चित्रकला कार्यशाला" में पड़ी थी, जहाँ कलाकारों ने 2x3 फीट कैनवास पर एक्रिलिक रंगों से अपने अनुभव और दृष्टि को अभिव्यक्ति दी। यह प्रदर्शनी कला को केवल सौंदर्य तक सीमित नहीं रखती, बल्कि इसे संवाद, चेतना और प्रतिरोध का सशक्त माध्यम बनाती है। गाँधी के विचारों की प्रेरणा से यह आयोजन जलवायु न्याय और लैंगिक समानता के प्रश्नों को रचनात्मक रूप से सामने लाता है। हर पेंटिंग अपने भीतर एक विशिष्ट कथा समेटे है– कहीं आक्रोश है, कहीं करुणा, और कहीं उम्मीद की चमक। जंगलों की कटाई, विस्थापन, बाढ़ और सूखे की मार से लेकर महिलाओं की कठिन दिनचर्या तक, चित्रकारों ने जलवायु संकट के विविध आयामों को उकेरा है। स्त्री और प्रकृति का गहरा रिश्ता बार-बार इन कृतियों में उभरकर आता है : कहीं स्त्री के स्पर्श से सूखी पत्ती हरी हो जाती है, तो

कहीं गर्भवती महिलाओं पर बदलते मौसम की त्रासदी प्रकट होती है। कुछ कृतियाँ सीधे समाधान की ओर भी संकेत करती हैं जैसे– वर्षा जल संग्रहण और इको-फ्रेंडली हाउसिंग का चित्रण। वहीं अन्य चित्र औद्योगीकरण, खनन और अनियंत्रित विकास की भयावह परिणतियों को सामने रखते हैं। इन सबके बीच एक साझा स्वर गूँजता है कि जलवायु संकट केवल पर्यावरण का सवाल नहीं, बल्कि यह सामाजिक, नैतिक और लैंगिक प्रश्न भी है। "रंग, रेखा और प्रतिरोध" दरअसल एक सामूहिक घोषणा है– कि स्त्री और प्रकृति की अस्मिता को सुरक्षित किए बिना भविष्य की कल्पना अधूरी है। यह प्रदर्शनी हमें न केवल संकट का बोध कराती है, बल्कि समाधान और बदलाव की राह पर सोचने के लिए प्रेरित भी करती है। आइए, इन पेंटिंग्स के माध्यम से हम पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय और लैंगिक समानता की अहमियत को समझें और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य के निर्माण का संकल्प लें।

अनुकृति टोप्पो

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) से पॉटरी व सिरेमिक में BFA और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिज़ाइन (NID), अहमदाबाद से सिरेमिक और ग्लास डिज़ाइन में मास्टर्स किया है। उन्होंने 2024 में UGC-NET भी क्वालिफाई किया है और Asian Heritage Foundation में इंटर्नशिप भी की है

E-mail:anukrititoppo@gmail.com

सृष्टि का ब्लैकहोल

मैंने अपनी पेंटिंग में जलवायु परिवर्तन के डार्क रियलिटी को दिखाने की कोशिश की है। औद्योगिक विकास के कारण गर्म होती धरती और उसकी व्यथा को चित्रित कर रही हूँ। साथ ही खनन प्रभावित इलाक़ों में लोग प्रदूषित पानी पीने को मजबूर हैं, जंगल जल रहा है, डिफॉरेस्टेशन हो रहा है। लगता है कि आने वाले समय में पूरी सृष्टि ब्लैकहोल में समा जाएगी।

अर्पिता राज नीरद

जनजातीय और समकालीन चित्रकला की प्रयोगधर्मी कलाकार, प्राचीन कला केंद्र, चंडीगढ़ की फाइन आर्ट की छात्रा। आदिवासी चित्रकला अकादमी, शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, दुमका से सम्बद्ध

E-mail:arpitarajnirad17@gmail.com

तपती धूप और सूखी धरती

इस पेंटिंग के माध्यम से मैंने जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग की गहरी पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। तपती धूप और सूखी धरती के बीच खड़ी यह लड़की केवल पानी की एक बूंद और बारिश की आस में भगवान से प्रार्थना कर रही है। यह दृश्य मानवता को चेतावनी देता है कि यदि हम पर्यावरण को बचाने के लिए गंभीर कदम नहीं उठाते, तो आने वाली पीढ़ियाँ प्यास और विनाश से जूझती रहेंगी।

चाँदनी कुमारी
वीर शहीद बुधु भगत विश्वविद्यालय
राँची में फाइन आर्ट की छात्रा
E-mail:Chandnikumari91994@gmail.com

कटते जंगल, बुझती उम्मीद

मेरी इस पेंटिंग में जंगल के दो रूपों को दर्शाया गया है– एक ओर कटे हुए पेड़ और विनाश का दृश्य है, तो दूसरी ओर हरी पत्तियों के साथ बची हुई उम्मीद। वन कटाई से पर्यावरण असंतुलन और मानव जीवन पर गहरा संकट मंडरा रहा है। यह कृति संदेश देती है कि प्रकृति के साथ सामंजस्य ही भविष्य को सुरक्षित रख सकता है।

दिव्याश्री
अहमदाबाद से एनीमेशन फिल्म डिज़ाइन में ग्रेजुएट हैं
E-mail:divyashree232000@gmail.com

सस्टेनेबल भविष्य की राह

मेरी यह पेंटिंग महिलाओं की उस सक्रिय भूमिका को रेखांकित करती है, जिसमें वे जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने के साथ-साथ समाधान खोजने में भी अग्रणी हैं। इसमें रेनवाटर हार्वेस्टिंग, इकोफ्रेंडली (सस्टेनेबल) हाउसिंग और पौधारोपण को प्रमुखता से दिखाया गया है। यह कृति इस संदेश को प्रसारित करती है कि जलवायु संकट से निपटने के लिए प्रकृति के साथ संतुलन, संरक्षण और सामूहिक प्रयास ही आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

ज्योति वंदना लकड़ा

ट्राइबल कंटेपररी आर्टिस्ट। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से फाइन आर्ट्स (स्कल्प्चर) में स्नातक। संप्रति : ईस्ट लंदन विश्वविद्यालय, डॉकलैंड्स परिसर में अध्ययनरत

E-mail:lakrajyoti.v.11@gmail.com

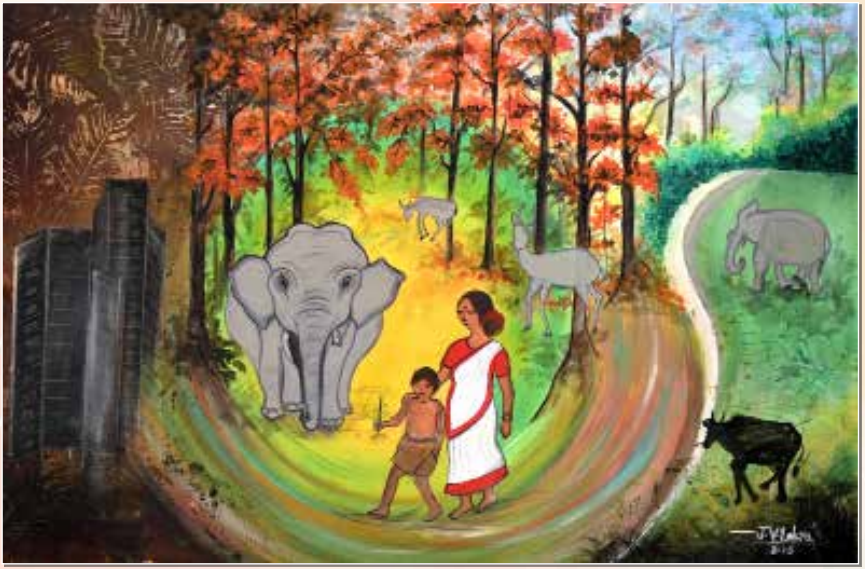

जंगल की पुकार

मेरी यह पेंटिंग झारखंड की प्रकृति और मनुष्य के गहरे संबंध को दर्शाती है। इसमें शहरीकरण की दौड़ और हरी-भरी धरती के बीच का विरोधाभास चित्रित है। हाथी, हिरण और हरियाली जीवन के संतुलन और जंगल की आत्मा के प्रतीक हैं। महिला और बच्चा यह संदेश देते हैं कि पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा बचपन से ही आवश्यक है। यह कृति चेतावनी देती है कि यदि हमने प्रकृति को नहीं बचाया तो केवल कंक्रीट का जंगल शेष रह जाएगा।

कारबी दास

वीर शहीद बुधु भगत विश्वविद्यालय राँची से
एप्लाइड आर्ट में स्नातक की पढ़ाई कर रही हैं
E-mail:karabidas8612@gmail.com

बाढ़ और सूखे के बीच जीवन

मैं असम से हूँ, मेरी यह पेंटिंग जलवायु परिवर्तन की विभीषिका को दर्शाती है। असम की बाढ़ और झारखंड की सूखे की समस्या को मैंने एक ही स्त्री के रूप में चित्रित किया है। उसका निचला हिस्सा बाढ़ में डूबा है, जबकि ऊपरी हिस्सा सूखे और दरारों से प्रभावित है। यह स्त्री केवल पीड़ित नहीं, बल्कि प्रकृति और समाज के बीच संतुलन की प्रतीक भी है। इस कृति के माध्यम से मैं यह संदेश देना चाहती हूँ कि जलवायु परिवर्तन की मार से बचने के लिए हमें सामूहिक रूप से जल, जंगल और ज़मीन की रक्षा करनी होगी।

मनीता कुमारी उराँव

वाणिज्य में स्नातक की पढ़ाई के बाद रांची विश्वविद्यालय से फाइन आर्ट्स में परास्नातक की डिग्री हासिल की है

E-mail:manita.chala787@gmail.com

प्रोटेस्ट फ़ॉर एक्जिस्टेंस

मेरी इस पेंटिंग में विकास के नाम पर हो रहे पर्यावरण विनाश और उससे प्रभावित लोगों के प्रतिरोध को दिखाती है। इसमें महिलाएँ, पुरुष और बच्चे अपने जल-जंगल-ज़मीन और अस्तित्व की रक्षा के लिए खड़े हैं। यह कृति बताती है कि जलवायु परिवर्तन का सबसे गहरा असर आम लोगों पर पड़ता है और खासकर महिलाएँ इसकी अग्रिम पंक्ति में संघर्षरत हैं।

मानसी टोप्पो

वीर शहीद बुधु भगत विश्वविद्यालय राँची
की विज़ुअल आर्ट कि छात्रा
E-mail:mansitoppo63@gmail.com

जननी और जलवायु का संकट

इस पेंटिंग में मैंने जलवायु परिवर्तन का असर महिलाओं, विशेषकर गर्भवती महिलाओं पर दिखाया है। गर्भपात जैसी त्रासदियाँ क्लाइमेट चेंज से और अधिक बढ़ रही हैं। चित्र में गर्भवती महिला के ऊपर काले बादल और बिजली संकट का प्रतीक हैं, जबकि पेड़-पौधे और हरियाली उसके संरक्षण और समाधान का संकेत देते हैं। यह संदेश है कि प्रकृति के संतुलन और पेड़ लगाने से ही आने वाली पीढ़ियों का जीवन सुरक्षित रह सकता है।

नीलम नीरद

आदिवासी चित्रकला अकादमी, शोध एवं
प्रशिक्षण संस्थान, दुमका की सचिव
E-mail:nilamnirad1@gmail.com

प्रदूषित सांसें

इस पेंटिंग में मैंने वायु प्रदूषण की बढ़ती समस्या को दर्शाया है, जो अब केवल शहरों तक सीमित नहीं रही, बल्कि गाँवों को भी प्रभावित कर रही है। इसमें एक ग्रामीण महिला दिखाई गई है, जो पानी भरने जा रही है, लेकिन दूषित हवा में साँस लेना भी उसके लिए कठिन हो गया है। यह चित्र इस ओर संकेत करता है कि वायु प्रदूषण का बोझ महिलाओं पर विशेष रूप से अधिक पड़ता है, क्योंकि वे जीवन-निर्वाह के कार्यों में प्रत्यक्ष रूप से इससे प्रभावित होती हैं।

निशी कुमारी

वीर शहीद बुधु भगत विश्वविद्यालय राँची से
पेंटिंग में BFA किया है

E-mail:nishikumarinic07@gmail.com

जलवायु संकट और स्त्री

इस पेंटिंग में मैंने दिखाया है कि क्लाइमेट चेंज का सबसे गहरा असर महिलाओं पर पड़ता है। जब पुरुष आजीविका के लिए पलायन कर जाते हैं, तो घर और परिवार की पूरी ज़िम्मेदारी महिलाओं पर आ जाती है। ऐसे हालात में उन्हें पानी की कमी, बच्चों की परवरिश और जीवन की कठिनाइयों का अकेले सामना करना पड़ता है। यह कृति उन अदृश्य संघर्षों को उजागर करती है, जिन्हें महिलाएँ रोज़ सहती हैं।

पिंकी कुमारी

कला संगीत विश्वविद्यालय,
खैरागढ़ से BFA और MFA किया है
E-mail:artistpinkymahto@gmail.com

लाल रेखा के पार

मेरे इस चित्र में प्रकृति और विकास के बीच का टकराव दिखाया गया है। हरे मैदान और पक्षी जीवन जैव विविधता का प्रतीक हैं, जबकि कंक्रीट ढाँचे अंधाधुंध विकास की ओर संकेत करते हैं।

लोहे के खांचे में फंसा पक्षी मानव हस्तक्षेप से उपजी पीड़ा को दर्शाता है। ज़मीन पर खिंची लाल रेखा निजीकरण और महिलाओं की भूमि तक पहुँच की बाधा है। यह चित्र संदेश देता है कि सतत विकास के लिए प्रकृति और अधिकारों के बीच संतुलन आवश्यक है।

रंजीता सिंह

पेंटिंग में परास्नातक (Masters) की डिग्री प्राप्त की है

E-mail:ranjeetasingh28081987@gmail.com

पृथ्वी की आँखों से

मेरी पेंटिंग में जलवायु परिवर्तन को मानवीय, सामाजिक और लैंगिक दृष्टिकोण से चित्रित किया गया है। एक विशाल आँख, जिसकी पुतली में पृथ्वी है, पर्यावरण की पीड़ा को महसूस करती है और उससे गिरता आँसू विनाश का प्रतीक है। बायाँ भाग औद्योगीकरण और वनों की कटाई से हुए क्षरण को दिखाता है, जबकि दाहिना भाग संरक्षण के प्रयासों को उजागर करता है।यह चित्र जलवायु परिवर्तन की सबसे गहरी मार झेलने वाली महिलाओं और हाशिए के समुदायों को केंद्र में लाता है। यह कृति सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय समानता की पुकार है।

रितेश्ना राज

वीर शहीद बुधु भगत विश्वविद्यालय राँची के
विज़ुअल आर्ट विभाग की छात्रा
E-mail:riteshnaraj304@gmail.com

नारी : धरती का प्रतिरूप

महिलाएँ और प्रकृति एक ही जीवन-स्रोत से जुड़ी हैं। जब हम प्रकृति का विनाश करते हैं, तो दरअसल महिलाओं के अस्तित्व और उनकी शक्ति को भी कमजोर कर रहे होते हैं। यह चित्र एक चेतावनी है और साथ ही एक उम्मीद – कि प्रकृति की रक्षा करना सिर्फ़ महिलाओं के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी मानवता के अस्तित्व के लिए अनिवार्य है।

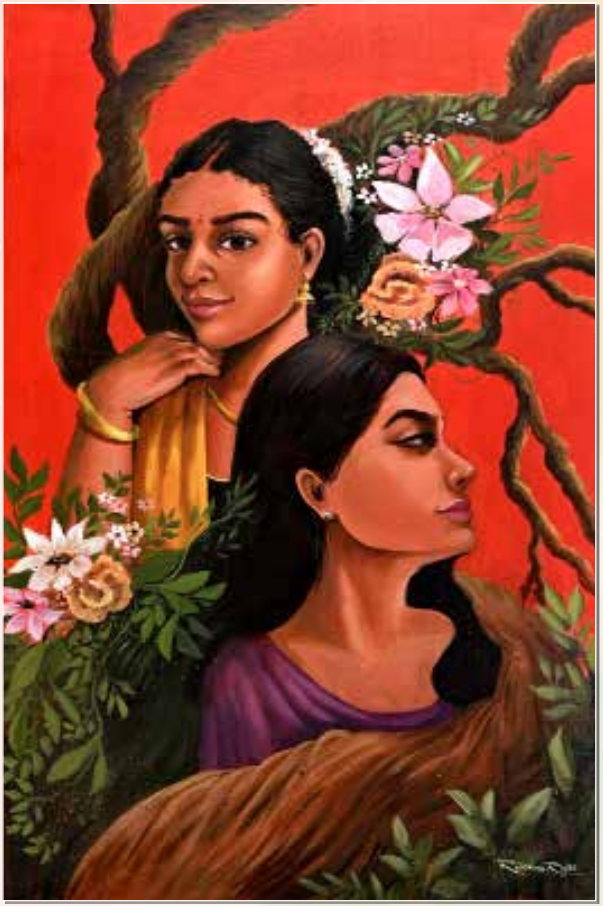

रोशनी खलखो

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छत्तीसगढ़) से BFA (पेंटिंग) की पढ़ाई कर रही हैं

E-mail:roshnikhalkho863@gmail.com

स्त्री और सृष्टि : जीवन की साझेदार

पेंटिंग के ज़रिए मैं जलवायु परिवर्तन से लड़ने में महिलाओं की भूमिका के बारे में बता रही हूँ। इसमें चारों तरफ़ सूखा है, लेकिन बर्बादी से दुखी एक महिला जब सूखे पौधे की पत्ती को छूती है तो वह हरी हो जाती है। ऐसा इसीलिए भी क्योंकि महिलाएँ प्रकृति के प्रति पुरुषों से ज़्यादा संवेदनशील होती हैं। मेरी पेंटिंग में उम्मीद है।

सास्मी रेखा पात्रा

उत्कल यूनिवर्सिटी ऑफ़ कल्चर से
शिक्षा प्राप्त की है

E-mail:sasmiinart@gmail.com

समय की छाया में संकट

पहले के ज़माने में सनक्लॉक से समय का पता लगाते थे। इसीलिए मैंने मेरी पेंटिंग में जलवायु परिवर्तन से हो रहे नुक़सान को इसी के माध्यम से दर्शाया है। धीरे-धीरे हरियाली ख़त्म हो रही है और हम चरम मौसमी घटनाओं से जूझ रहे हैं। अकाल, फ़ॉरेस्ट फ़ायर, सूखा, अतिवृष्टि इसका उदाहरण हैं। इस पेंटिंग में मैंने प्रकृति और पौधों को इन सब से बचाने के लिए चाबी के रूप में दिखाया है।

सोफिया मिंज

पुणे के स्कूल ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी से Apparel Production & Merchandising में पोस्ट ग्रेजुएशन

बी.टेक मेसरा, झारखंड

E-mail:Sophia.minj2@gmail.com

बचेगी प्रकृति, तो बचेगा भविष्य

मेरी इस पेंटिंग में स्वस्थ जलवायु, तो दूसरी तरफ जलवायु संकट से हुए नुक़सान को दिखाया है। इसमें एक तरफ़ समृद्धि है तो दूसरी ओर गर्मी, पानी की कमी, अशिक्षा, सूखी खेती की स्थिति है। संदेश यही है कि अगर पर्यावरण बचाएँगे तो हम भी सुख और समृद्धि की तरफ़ बढ़ेंगे।

सृजिता

वीर शहीद बुधु भगत विश्वविद्यालय राँची की
BFA पेंटिंग की छात्रा
E-mail:shreeejita9@gmail.com

संघर्ष, मातृत्व और जल संकट

मेरी पेंटिंग का आइडिया मेरे घर से ही आया है। पुरुष परिवार चलाने के लिए आर्थिक रूप से मदद करता है, लेकिन महिलाओं का संघर्ष घर में रहकर भी बड़ा है। इस संघर्ष को जलवायु परिवर्तन ने और बड़ा कर दिया है। मेरी पेंटिंग में एक माँ अपने बच्चे को पीठ पर बांधकर पानी भरने जा रही है। आर्थिक स्थिति इतनी ख़राब है कि किलोमीटरों चलने के बाद जिस मटके में पानी भरकर ला रही हैं, वो भी चटका हुआ है।

सुधा कुमारी

पटना यूनिवर्सिटी के कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट से स्नातक और सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई से MFA (2022–2024) की पढ़ाई पूरी की है।

E-mail:sudhaKumari091999@gmail.com

आखरी पेड़ और लड़की

मेरे गाँव कुरू में सड़क बनाने के दौरान बरगद सहित सैंकड़ों पेड़ काटे गए। इससे जंगली जानवर भी गाँव से पलायन कर गए। मेरे देखते हुए ही गांव काफ़ी बदल गया है। साथ ही चरम मौसमी घटनाएँ भी हो रही हैं। इससे सभी वर्ग प्रभावित हो रहे हैं। जलवायु परिवर्तन से स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव पड़ रहा है। मेरी पेंटिंग में इंसानी लालच में पेड़ कटने के बाद की स्थिति में एक लड़की को दिखाया है। क्योंकि महिलाएँ और प्रकृति दोनों एकरूप ही हैं। पेंटिंग में सारा जंगल काट लिया गया है और सिर्फ़ एक पेड़ बचा है। इसके माध्मम से मैं ज़्यादा से ज़्यादा पेड़ लगाने की अपील कर रही हूँ।

तान्या मिंज

गेम डिज़ाइन में स्नातक और
बीआईटी नोएडा से डिज़ाइन में परास्नातक
E-mail:minz.tanya0888@gmail.com

जलवायु संकट की मार, औरतों का भार

जलवायु परिवर्तन का असर महिलाओं पर है। मेरी पेंटिंग में ग्रामीण महिलाओं के संघर्ष को दिखाया गया है। इसमें बाढ़ और सूखे की वजह से उनकी रोजाना की ज़िंदगी के संघर्षों को बारीकी से दिखाने की कोशिश की है।

Glimpses of Past Events...

Website:*www.deshajabhikram.com*
E-mail:*deshajabhikram@gmail.com*